इकाई 12 केस अध्ययन (हरित क्षेत्र, सेवा, ग्रामीण बैंक और स्व-सहायता समूह)

इकाई की रूपरेखा

12.1 प्रस्तावना

लक्ष्य और उद्देष्य

12.2 हरित क्षेत्र आन्दोलन

12.3 स्वनियोजित महिला संघ (सेवा)

12.4 ग्रामीण बैंक (बांग्ला देष)

12.5 डी.डब्ल्यू.सी.आर.ए. (ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं और बच्चों का विकास) स्व–सहायता समूह

12.6 सारांष

12.7 बोध प्रष्न

12.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

12.1 प्रस्तावना

शान्ति की प्राप्ति अनेक तरीकों से हो सकती है जैसे समझौते, समाज कार्य, सांस्कृतिक आदान–प्रदान और इस तरह के कई प्रकार के प्रयास हो सकते हैं। इस तरह के प्रयासों में महिलाओं को अधिक गंभीर माना जाता है, उन्हें सफल कहा जा सकता है। सदियों से ऐसे अनेक उदाहरण सामने आए हैं जिनसे पता चलता है कि वे (महिलाएँ) शान्ति लाने में सदैव अग्रणी रही हैं। शान्ति एक ऐसा लक्ष्य है जिसे सतत् सौहार्द्रपूर्ण तरीकों से हासिल किया जा सकता है। महिलाएँ न केवल इस प्रकार के कार्यों का नेतृत्व कर रही हैं अपितु वे उन कार्यों में भागीदारी भी कर रही हैं इस तरह के प्रयास जिनका नेतृत्व पुरुष कर रहे हैं क्योंकि महिलाओं ने जितनी संख्या में पुरुषों ने भी अपने अपने कार्यों में योगदान दिया है उतनी ही संख्या में शान्ति हासिल करने और उसे निरंतर बनाए रखने के लिए योगदान दिया है। इस इकाई में हम इस तरह के कुछ केस अध्ययन (केस स्टडीज़) के बारे में विचार करेंगे जिसमें पर्यावरण, सामाजिक कार्य, आर्थिक उद्यम, विशेषतया स्व–सहायता समूहों के माध्यम से किए जाने वाले प्रयासों का अध्ययन करेंगे। इन अलग–अलग क्षेत्रों में शान्ति हासिल करने के प्रयास हुए हैं। स्व–सहायता समूह कल्याण योजनाओं के उद्देष्य, आकांक्षा और उसके सफल क्रियान्वयन को संभव बनाते हैं यदि सही सघन और सही उद्देष्य से उन्हें लागू किया जाता है। ये स्व–सहायता समूह अधिक सुदृढ़ होते जा रहे हैं और वे पर्यावरण संरक्षण, ग्रामीण गरीबी का उन्मूलन, महिला सषक्तीकरण और उद्यमषीलता को बढ़ावा देना और शान्तिपूर्ण एवं अहिंसक समाज के निर्माण जैसे आदर्षों को प्राप्त करने में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। गाँधी प्रायः कहा करते थे हर तरह से महिलाएँ अधिक शक्तिषाली हैं। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि उन्हें और सषक्त बनाने की आवष्यकता है क्योंकि उनके सषक्तीकरण से समाज के समग्र विकास में सहायता मिलेगी। बहुत से नेताओं ने सफलता के इन तरीकों का पालन किया विशेषतः गाँधीवादी विचारों और कार्य योजना के अनुरूप कार्य करने का प्रयास किया है। दुनिया भर में वे इन विचारों का प्रभाव छोड़ने के प्रयास करते रहे और उनके जैसा कार्य करने की अन्य लोगों में होड़ सी लग गई थी।

लक्ष्य और उद्देष्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप :

- स्व–सहायता समूहों की जटिलताएँ समझ सकेंगे;
- दुनिया भर में स्व–सहायता समूहों का विकास और उसकी कार्य प्रणाली को जान सकेंगे; और
- गरीबी और भूखमरी को समाप्त करने में उनके कार्यों का योगदान और उनका महत्व की समीक्षा कर सकेंगे।

12.2 हरित क्षेत्र आन्दोलन

केन्या की वंगारी मथाई को वृक्षों के संरक्षण के लिए किए गए उनके प्रयासों के लिए नोबेल शान्ति पुरस्कार प्रदान कर के नोबेल शान्ति समिति ने इस तथ्य को स्वीकार किया है कि "षान्ति" पर्यावरण संरक्षण करने की हमारी क्षमता पर निर्भर करता है।" शान्ति पुरस्कार के इतिहास में यह पहली बार हुआ कि समाज में शान्ति की स्थापना करने के लिए पर्यावरण को भी एक आवष्यकता के रूप में समझा गया उसे महत्वपूर्ण माना गया है। मथाई ने केन्या में हरित क्षेत्र को संरक्षित करने और उसको संवृद्ध करने के लिए आन्दोलन का आरंभ किय थाा। आन्दोलन मध्य केन्या में सन् 1976 में आरंभ हुआ और स्व–सहायता समूहों को एक साथ जुटाकर पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका के क्षेत्रों में लगभग 30 मिलियन (3 करोड़) वृक्ष लगाए गए। इस आन्दोलन के कई कारण थे – वन क्षेत्र घटकर 2.5 से 3 प्रतिषत तक पहुँच गया था, अत्यधिक कुपोषण एवं स्वच्छ जल का अभाव बन गया था और खाना पकाने के लिए ईंधन की कमी हो गई थी। इसका कारण था कम वर्षा का होना या सूखा पड़ना और जमीन का मरुस्थल बन जाना, नदियों का पानी सूखना या सूख जाना, वर्षा के जल को सोखने में भूमि की अक्षमता, इसके साथ ही 80–90 प्रतिषत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है जो प्राकृतिक संसाधनों और प्राकृतिक ऊर्ज़ा पर ही निर्भर हैं, बढ़ता हुआ शहरीकरण जिसके कारण प्राकृतिक संसाधनों पर बहुत दबाव पड़ रहा था, भूसंसाधनों पर दबाव और अस्तित्व के लिए ख़तरे आदि का सामना। आन्दोलन के उद्देष्य थे – वृक्षारोपण, वानिकी का रखरखाव, वृक्षों का रखरखाव, सरकारी वन विभाग से समन्वय स्थापित करना, वृक्षारोपण और उसके रखरखाव की बुनियादी जानकारी का प्रसार और जनसमर्थन जुटाना। लोगों को समूहों के रूप में विभाजित किया जाता था जहाँ उनकी समस्याओं पर विचार होता और उनके समाधान के प्रयास किए जाते थे। वे जल्दी ही अपने ज्ञान और कौषल का उपयोग कर सकते हैं। इस कार्य के लिए इन लोगों ने जो भी पौधे वे लगाते थे उसके लिए प्रत्येक पौधे के बदले बहुत थोड़े से पैसे भी लेते थे और उस पौधे की कम से कम छः महीने तक देखभाल करते थे। वंगारी मथाई ने भी लोगों को वृक्षारोपण करने और उन वृक्षों की देखभाल करने को कहा। वर्ष 2000 तक हरित क्षेत्र समूहों (उनको यही नाम दिया गया) में हजारों महिला–पुरुष शामिल हो गए थे इसके ही परिणामस्वरूप आज 6,000 से अधिक नर्सरियाँ आज केन्या में चला रहे हैं।

इस आन्दोलन और उसकी तकनीकों को अन्य देषों के नेताओं के साथ भी साझा किया गया जिन्होंने अपने–अपने देषों में इस आन्दोलन को शुरु किया। इस कार्यक्रम में "केन्या राष्ट्रीय महिला परिषद" के अंतर्गत महिलाओं की भूमिका पर बल दिया गया। इस आन्दोलन की अपनी कठिनाइयाँ थीं क्योंकि सरकारी अधिकारियों के विरोध का इसे सामना करना पड़ता था जो सरकारी समर्थन के रूप में वन एवं पार्क क्षेत्रों को इस आन्दोलन को सौंपने के लिए उत्तरदायी थे। यही नहीं इस आन्दोलन के विषय में दुष्प्रचार भी किया गया था। इसके नकारात्मक प्रभावों को बताया गया और इस आन्दोलन से जुड़े नेताओं के निज़ी जीवन के बारे में भ्रामक बातें और अफवाहें फैलाई गई और असंतुष्टों को काम छोड़ने के लिए मज़बूर किया गया, नेताओं को जेल में डाल दिया गया और लोगों में डर की भावना पैदा की

गई। इस तरह की कई रणनीतियों के द्वारा आन्दोलन का विरोध किया गया। हरित क्षेत्र समूहों ने दुष्प्रचार अभियान का विरोध अहिंसक तरीकों से किया और सरकारी अधिकारियों को पत्र लिखे, प्रतिवेदन दिए, समाचारपत्रों में लेख लिखकर अपने आन्दोलन का पक्ष रखा।

आज इस आन्दोलन के साथ 4,000 समूह केन्या में जुड़े हुए हैं जो जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं का सामना कर रहे हैं। महिलाओं–पुरुषों के स्व–सहायता समूहों के प्राकृतिक पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में हुए सर्वाधिक सफल आन्दोलनों में से यह एक बना दिया गया था। समूहों ने पर्यावरण संकट का समाधान करने के लिए इन तरीकों को शामिल किया : (1) वृक्षारोपण और पर्यावरण व्यवस्था के संरक्षण और प्रबंधन के द्वारा कार्बन पृथक्करण में कमी; (2) अनुकूलन, वृक्षारोपण के प्रोत्साहन और सतत् कृषि तकनीक और देषज़ खाद्यान्न फसलों के विकास जिससे खाद्य सुरक्षा को बढ़ाया जा सके, वर्षा के जल के संरक्षण और मिट्टी के कठोर बनाने के लिए भूक्षरण को रोकना; (3) सतत् विकास, आजीविका को बढ़ाने और षिक्षा आदि के प्रोत्साहन करना जिससे सहस्राब्दी विकास के लक्ष्यों (MDGs) की दिषा में प्रगति कर सकें और आर्थिक रूप से अधिक मज़बूत बन सके। इस आन्दोलन ने वैष्विक समस्याओं का स्थानीय समाधान ढूँढ़ा, प्रभावी नेटवर्किंग के माध्यम से स्थानीय आवष्यकताओं को समझना और जानकारी को आपस में साझा करना और पर्यावरण संरक्षण का एक मॉडल विकसित करना था जिसको दुनिया भर में अपनाया जा सके। इसमें हर जगह फैली हुई समस्याओं के दीर्घकालीन समाधान के लिए एक प्रभावी सामुदायिक रचनातंत्र उत्पन्न करने की आवष्यकता पर बल दिया गया।

अन्त में इस आन्दोलन और उसके कार्यों के विषय में वांगरी मथाई द्वारा नोबल शान्ति पुरस्कार ग्रहण करते समय अपने स्वीकृति वक्तव्य में व्यक्त किए गए विचारों को यहाँ याद करना आवष्यक है "जिन महिलाओं के साथ हमने कार्य किया है उन्होंने महसूस किया कि अतीत के विपरीत वे अपनी बुनियादी आवष्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ थी, यह उनके आसपास के पर्यावरण में गिरावट और व्यावसायिक खेती के कारण हुआ जो खाद्यान्न के उत्पादन के स्थान पर की जाने लगी थी। किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार ने इन छोटे किसानों के निर्यात की कीमतों को नियंत्रित किया जिससे उचित और न्यायसंगत आमदनी की गारंटी नहीं हो सकी। मुझे समझ में आ गया कि जब पर्यावरण नष्ट हो जाता है, उसे लूटा–खसोटा जाता है या उसका कुप्रबंधन होता है तब हम अपने जीवन की गुणवत्ता और भावी पीढ़ी के जीवन की गुणवत्ता को नष्ट करते हैं। महिलाओं द्वारा रेखांकित कुछ बुनियादी आवष्यकताओं को पूरा करने के लिए वृक्षारोपण स्वाभाविक और श्रेष्ठ चुनाव था। वृक्षारोपण आसान भी है और इसे किया भी जा सकता है और इसका तत्काल एक निष्चित और कम समय में सकारात्मक परिणाम आना निष्चित है। इसमें हमारी रुचि और प्रतिबद्धता को बनाए रखा जा सकता है। इस प्रकार हम लोगों ने एक साथ मिलकर 30 मिलियन (3 करोड़) से अधिक पौधे लगाए जिससे ईंधन, खाद्यान्न, मकान और आमदनी की प्राप्ति होती है जिससे बच्चों की षिक्षा और घरेलू आवष्यकताओं को पूरा किया जा सकता है। इस कार्य से रोज़गार का सृजन भी होता है और मृदा और जल संरक्षण को भी सुधारा जा सकता है। इसमें भागीदारी के द्वारा महिलाओं को जीवन में थोड़ी ताकत भी मिलती है। खासतौर से उनकी सामाजिक और आर्थिक हैसियत बढ़ती है और परिवार में उनका महत्व बढ़ जाता है। इस प्रकार यह कार्य सफलता से चल रहा है।"

12.3 स्वनियोजित महिला संघ (सेवा)

स्व–नियोजित महिला संघ – सेवा (Self-Employed Women's Association - SEWA) की स्थापना सन् 1972 में हुई थी। इसकी स्थापना इला आर. भट्ट ने की थी। यह एक साहसी समूह है जो मज़दूर

संगठनों की तरह काम करता है और महिलाओं को सहकारी समूहों में संगठित करता है। इस समूह का मुख्य कार्य गाँधीवादी अहिंसक तरीके से कार्य करना है। इला भट्ट जमीनी स्तर पर विकास के असाधारण उद्यमी के रूप में व्यापक रूप से जानी जाती हैं। उन्होंने अपनी जीवन में सर्वाधिक गरीब और सर्वाधिक दलित एवं उत्पीड़ित मज़दूर महिलाओं के जीवन को सुधारने के लिए समर्पित कर दिया है। वे संसद की सदस्य भी थी। उन्होंने जीवन भर गाँधी के सिद्धान्तों एवं आदर्शों का अनुपालन किया और उन्हें अपने जीवन में उतारा। इस संगठन का विशेष बल महिला सषक्तीकरण और उन्हें आजीविका प्रदान करना और उन्हें सहकारिता के साथ जोड़ना है जिसके माध्यम से छोटे–छोटे व्यापार और अन्य असंगठित क्षेत्रों में कार्य करने के लिए उनका सषक्तीकरण हो सके। ये महिलाएँ आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्गों से सम्बन्धित हैं जो पारम्परिक रूप से हस्तकला और व्यवसाय से जुड़ा रहा है। इन वर्गों के पास बहुत कम सम्पत्ति है या वे सम्पत्ति हीन हैं। इनमें से अधिकांष महिलाएँ स्वनियोजित (self-employed) हैं और वे अनौपचारिक क्षेत्र से जुड़ी हैं जहाँ उन्हें नियमित वेतन नहीं मिलता है न ही वे अपनी गरीबी के कारण कोई बचत कर पाती हैं। वे अधिकतर कृषि क्षेत्र में काम करती हैं या घर में बनी चीजों को बेचती हैं।

इन स्वनियोजित महिलाओं को इन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है (1) घर में बनी चीज़ों की निर्माता या उत्पादक अथवा उत्पादन करना। इसमें बुनाई, मिट्टी के बर्तन बनाना (कुंभकारी), बीड़ी बनाना, अगरबत्ती बनाना, पापड़ बनाना और सिले सिलाए (रेडीमेड) कपड़े तैयार करना, सूत कातना या कढ़ाई करना; (2) लघु विक्रेता और फेरी वालों का काम – जो सब्जियाँ, फल और घरेलू उपयोग की चीजें ठेले पर या रेहड़ियाँ लगाकर बेचती हैं। (3) सेवा प्रदाता – शारीरिक श्रम करने वाले मज़दूर जैसे खेत में काम करने वाले मज़दूर, निर्माण कार्य में लगे मज़दूर, ठेके पर काम करने वाले मज़दूर, लाण्ड्री (धुलाई) और घरेलू काम करने वाले मज़दूर। इनमें कूड़ा बटोरने वाले और लकड़ी से बनी चीजों को इकट्ठा करने वाले मज़दूर इस सेवा में सम्मिलित हैं (सेवा, 1995, पृ.1) इस सेवा में सम्मिलित हैं। सेवा (SEWA) के अधिकांष सदस्य ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं (रेखा दत्ता, 2003, पृ. 351)। सन् 1972 में अपनी स्थापना के बाद से ही सेवा (SEWA) ने गरीबों, स्वरोज़गार से जुड़ी (स्वनियोजित) कार्यकर्ताओं, श्रमिकों के सहकारिता और महिला आन्दोलन के रूप में अपनी प्रतिष्ठा बनाई। जिसने बड़ी संख्या में महिलाओं और गृहणियों के आर्थिक एवं समाज कल्याण के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया। पच्चीस श्रमिक नेताओं वाली कार्यकारिणी और चार स्टॉफ संगठनकर्ता इस संगठन को चलाते हैं। इसकी बैठक हर महीने में एक बार होती है जिससे जनता और सरकार से जुड़े मुद्दों पर रणनीतियों और प्रस्तावों पर विचार किया जाता है। इन मुद्दों का सम्बन्ध मज़दूरी और मद्यपान और घरेलू हिंसा जैसी सामाजिक समस्याओं आदि से होता है (उपर्युक्त)। सेवा (SEWA) का मुख्य ध्यान इन समस्याओं को सुलझाने के लिए महिलाओं के लिए संघर्ष पर होता है।

सेवा (SEWA) का उद्देष्य पारश्रमिक, काम के अवसर, और सीमांत क्षेत्रों में (पिछड़े क्षेत्रों में) कौषल का विकास के माध्यम से महिला सषक्तीकरण करना है। यहाँ स्व–सहायता, महिलाओं की मोलभाव की क्षमता, नए विकास उपलब्ध कराना जैसे मुद्दों पर बल देता है और महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने का अवसर प्रदान करता है। इसकी सदस्य आवष्यकता के आधार पर कार्य के मॉडल के अनुरूप कार्य करती हैं। वे अपने साथी सदस्यों की राय कुछ प्रष्नों के आधार पर जानना चाहती हैं जैसे संगठन के सदस्यों की बढ़ती संख्या को बेहतर आमदनी होती रहती है, वे बेहतर खानपान और पोषण, स्वास्थ्य, बच्चों की देखभाल, आवास, सम्पत्तियाँ, संगठनात्मक शक्ति, नेतृत्व और व्यक्तिगत या सामूहिक स्तर पर आत्मनिर्भरता के मामले में बेहतर स्थिति में हैं। वे विशेष मुद्दों पर भी उनकी राय जानना चाहती हैं जैसे कार्य का प्रकार, और महिलाओं के लिए आवष्यक सुरक्षा या पारिश्रमिक। यह संगठन की सफलता के मूल्यांकन के मापदंड के रूप में इस्तेमाल में लाया जाता है। सेवा (SEWA)

के अन्य कार्यों में शामिल हैं – स्वनियोजित महिला कार्यकर्ताओं को संगठन भावना से जोड़ना, सेवा (SEWA) बैंक के माध्यम से ऋण प्रदान करना और स्वास्थ्य, बच्चों की देखभाल, साक्षरता जैसे विभिन्न क्षेत्रों में शोध एवं प्रषिक्षण देना। इस प्रकार सेवा (SEWA) एक संगठन के रूप में काम करता है। एक सहकारिता, बैंक आदि सेवाओं के रूप में भी यह काम करता है।

भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में गृहस्थ अपनी आजीविका संबंधी आवष्यकताओं और आमदनी के लिए कृषि, पषुधन, हैण्डलूम (हथकरघा), और षिल्पकारी के कार्यें पर निर्भर रहते हैं। बहुत से ऐसे लघु या ग्रामोद्योग हैं जिनसे उन्हें अपनी न्यूनतम आवष्यकताओं को पूरा करने के लिए रोज़गार मिल सकता है। इस तरह के तबकों से जुड़ी महिलाओं को अपनी आमदनी जुटाने में सहायता मिलती हैं या फिर उन्हें उत्पादों और सेवाओं के उत्पादन और विक्रय के माध्यम से उन्हें लाभ पहुँचाता है। आपके इन वैकल्पिक स्रोतों पर महिलाओं की निर्भरता ने पारंपरिक कार्यों और आवष्यकता के समय मौसमी रोज़गार पर उनकी निर्भरता में कमी आ गई। सेवा (SEWA) नेतृत्व में उन्हें समूहों में इकट्ठा करने और दुग्ध, बच्चों की देखभाल और स्वास्थ्य से जुड़ी सहकारिता की स्थापना और हस्तषिल्प और ऋण और बचत समूहों बनाने में सहायता मिली है। कुछ जिलों में वे महिला दुग्ध उत्पादकों को संगठित करते हैं। कुछ अन्य जिलों में वे षिल्पकारी करने वाली महिलाओं को बाज़ार के साथ जोड़ते हैं जिससे वे अपनी उत्पादित वस्तुओं को अधिक ऊँची कीमतों पर बेच सकें क्योंकि इससे बिचौलियों की आवष्यकता नहीं पड़ेगी जो इसे कम कीमत पर खरीद कर बाज़ार में अधिक महँगे दामों पर बेच देते हैं। सेवा (SEWA) ने महिलाओं को कागज़ रिसाइकिल करने, कपड़े और सब्जियाँ बेचने में सहायता की। महिलाओं को अक्सर बिचौलिये और पुलिस परेषान करती थीं और ये उनसे सामान बेचने के बदले रिष्वत की माँग करते थे। इससे उनकी आमदनी बहुत कम रह जाती थी और वे और अधिक वंचित हो जाते थे। जो महिलाएँ नियमित रूप से धन उगाही का षिकार होती थी उनकी सहायता के लिए सेवा (SEWA) ने पुलिस के साथ नियमित रूप से बैठकें कीं जिनसे महिलाओं का उत्पीड़न बन्द हो सके।

सेवा (SEWA) सहकारी संगठन ने इस प्रकार आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा प्राप्त करने में महिलाओं की सहायता की। इसने महिलाओं को श्रमिकों से वस्तुओं एवं सेवाओं की उत्पादक, स्वामिनी, उपभोक्ता और प्रबंधक बना दिया और इस तरह उनके उद्यम कौषल को बढ़ाया। दो दषकों से अधिक समय से सेवा (SEWA) ने ग्रामीण महिलाओं के खेती और पषुधन पर आधारित कार्यों और घरेलू हस्तकलाओं के क्षेत्र में रोज़गार में वृद्धि में सहायता की है। "उन स्वनियोजित महिलाओं को ये सहकारी समितियाँ वर्ष भर रोज़गार उपलब्ध कराते हैं जिनका पूँजीगत अन्य संसाधनों पर कोई नियंत्रण नहीं हैं और जिन्हें कोई आर्थिक सुरक्षा नहीं मिली है (सेवा, 1997, पृ.13)। उन्हें अधिक मज़दूरी/वेतन की माँग करने और आत्मसम्मान और गरिमा के साथ बराबरी आर्थिक और सामाजिक तंत्र के साथ अन्तःक्रिया करने के लिए उनको सषक्त बनाया जाता है (सेवा, 1998, पृ.21)। बदले में यह संगठन को मज़बूत करता है और इस प्रकार से श्रमिकों के समग्र आन्दोलन को मज़बूती मिलती है (सेवा, 1997, पृ.29)।

सेवा (SEWA) संगठन में भाग लेने वाली स्वनियोजित महिलाएँ प्रायःअपनी आवाज़ सामूहिक आवाज़ में मिलाती हैं और अधिक आमदनी कमाने और शान्ति हासिल करने में एक–दूसरे की सहायता करती हैं और संगठन अपनी सदस्यों को असमानता से मुक्ति दिलाने में सहायता करता है। सहकारिता समितियाँ स्वतंत्र हैं और उनका अपना प्रबंधतंत्र है। वे रोज़गार, वित्तीय सेवाओं, स्वास्थ्य, बच्चों की देखभाल और इससे जुड़े अन्य कार्यों पर अपना ध्यान केन्द्रित करती हैं, "संगठन मुख्यतः अपना ध्यान संघर्ष पर केन्द्रित करता है जबकि सहकारिता समितियाँ विकास पर अपना ध्यान केन्द्रित करती हैं। इन दोनों की ही गतिविधियों और कार्यों में संघर्ष और विकास के तत्व मौज़ूद हैं" (सेवा, 2000, पृ.5)। संगठन का कार्य नेताओं को बनाना और कानूनी जागरूकता और स्वनियोजित महिलाओं के अधिकारों

के बारे में जागरूकता उत्पन्न करना है। उन्होंने उन बेईमान बिचौलियों के विरुद्ध संघर्ष करना भी सीख लिया है जो बाज़ार तक उनकी पहुँच को रोकते हैं। चूँकि महिलाओं के पास आवष्यक पूँजी नहीं होती और उनके पास सम्पत्ति भी नहीं होतीं इसलिए उन्हें सेवा (SEWA) बैंक के माध्यम से ऋण दिलाकर वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाती है। इससे उन्हें न केवल आय बढ़ाने में सहायता मिली अपितु उन्हें बचत बढ़ाने में भी सहायता मिली और उन्हें अपने परिवार के स्वास्थ्य और उत्तम षिक्षा प्रदान करने में सहायता मिलती है।

संस्थापक सदस्य के रूप में इला भट्ट का कथन है, "सेवा (SEWA) पारम्परिक अर्थव्यवस्था और इससे जुड़ी महिलाओं को पारंपरिक व्यवस्थाओं को कायम रखने के साथ साथ आधुनिक अर्थव्यवस्था में रूपांतरित करने के लिए कार्य करता रहा है। इससे न केवल भारत बल्कि भारतीय महिलाएँ, भारतीय गरीब महिलाएँ केन्द्र में आ रही हैं। उनमें यह गत्यात्मकता दो स्रोतों से आती हैं (जैसा कि सेवा (SEWA) के सदस्य मुझे बताते हैं) – मुख्यधारा से जुड़ने के लिए एक दृढ़ इच्छाषक्ति एवं प्रतिबद्धता और स्थाई मूल्यों, आध्यात्मिकता, सम्बन्ध, सौन्दर्यषास्त्र और ज्ञान व्यवस्था को चयन के आधार पर अपने अनुकूल बनाना है। आरंभिक वर्षों में चयनित मूल्यों के अनुकूलन में भारतीय गरीब महिलाओं को भविष्य की दिषा में बढ़ने में सहायता दी जितना कभी भी भारत के इतिहास या महिला जीवन के इतिहास में नहीं हुआ था।" उन्होंने यह भी कहा "गाँधी के विचारों ने हमें रास्ता दिखा दिया है। एक स्पष्ट दिषा दे दी है जिससे हम प्रतिबद्धता, सतत् प्रयास, सामाजिक परिवर्तन में महिलाओं के नेतृत्व में विनम्रतापूर्णक किन्तु दृढ़ विष्वास और वर्तमान के आगे जाकर देखने की इच्छा। इस खोज़ में सबसे अधिक प्रेरक बात यह थी कि यह स्वीकार किया गया कि हमने कितना हासिल किया है किन्तु इसके साथ ही हम यह महसूस कर रहे हैं कि हम इससे बेहतर कार्य कर सकते हैं। हमने यह महसूस किया है कि हम अपने देषकाल के भीतर महिलाओं के स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन कर सकें किन्तु इससे भी अधिक प्रेरक बात यह है कि हमें कभी भी ऐसा नहीं लगा कि हम ऐसा नहीं कर सकते।"

12.4 ग्रामीण बैंक (बांग्लादेष)

ग्रामीण बैंक मॉडल अल्प ऋण व्यवस्था के द्वारा ग्रामीण निर्धनता और अभावग्रस्तता को समाप्त करने का एक अत्यधिक सफल प्रयोग है। यद्यपि, वित्तीय तरीकों अर्थात् मौज़ूदा वित्तीय संस्थाओं के माध्यम से गरीबी दूर करने के प्रयास हर जगह किए जा रहे हैं किन्तु सहकारिता के मॉडल के बेहतर परिणाम सामने आए हैं और ग्रामीण बैंक ऐसे ही मॉडल का एक उदाहरण है। दीर्घकालिक, व्यापक पैमाने पर हितकारी सामाजिक परिवर्तन के रूप में यह परिणत हुआ है। बांग्लादेषी स्वाधीनता आन्दोलन में भागीदारी करने की इच्छा से प्रो. मुहम्मद युनूस ने अमेरिका की अत्यधिक आकर्षक नौकरी छोड़ दी थी और स्वाधीनता के बाद अध्यापन का पेषा अपना लिया था। सन् 1974 के अकाल के कुछ नकारात्मक प्रभाव पड़े जिनमें आधारिक संरचना का बिखराव, यातायात व्यवस्था चरमरा जाना और बड़ी संख्या में शरणार्थियों का होना, अपर्याप्त अन्तर्राष्ट्रीय सहायता, आय और व्यय स्तर और कृषि उत्पादन में सीधी गिरावट आदि शामिल हैं। यह एक नवोदित राष्ट्र के लिए अर्थव्यवस्था में भारी गिरावट के रूप में परिणत हो गया था। प्रो. युनूस ने सिंचाई, उर्वरक और किसानों को बीज मुहैया कराकर कृषि उत्पादन में सुधार लाने के लिए कुछ तरीकों को आजमाया जिससे भयानक भूखमरी और कुपोषण का सामना किया जा सके।

आम आदमी कठिनाई का मुकाबला करने में अक्षमता के कारण गरीबी का स्तर और बढ़ गया था। यही नहीं विभिन्न हस्तकौषलों और षिल्पकारी में उनके कौषल बेमानी थे क्योंकि ऋणदाता गरीबों पर ऋण के बदले कुछ अधिक ब्याज वसूलते थे। बैंकों ने भी गरीबों को ऋण देने योग्य नहीं समझा। इसके

कारण ग्रामीण बैंक की स्थापना की दिषा में कार्य हुए जो गरीबों को ऋण उपलब्ध कराता है। जैसा कि प्रो. युनूस कहते हैं, "ग्रामीण बैंकों के माध्यम से हमने वित्तीय भेदभाव को चुनौती दीं। हमने सबसे गरीब (निर्धनतम) व्यक्ति को ऋण देने का साहस दिखाया। हमने उन दीन–हीन महिलाओं को भी इसमें शामिल किया जिन्होंने अपने जीवन में रुपये छुए तक नहीं थे ... किन्तु ग्रामीण बैंक ने न तो कभी भेदभाव किया न ही भाग खड़ा हुआ। इसके बजाय इसका विस्तार हुआ और यह अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचा। आज यह 7 मिलियन (70 लाख) से अधिक लोगों को ऋण प्रदान करता है जिनमें से 97 प्रतिषत महिलाएँ हैं जो बांग्लादेष के 78,000 गाँवों में रहती हैं।"

अपनी स्थापना से लेकर अब तक इस बैंक ने कुल 6 बिलियन अमरीकी डॉलर का ऋण प्रदान किया है और इसकी अदायगी (ऋण वसूली) का प्रतिषत 98.6 है। यह लाभ भी कमाता है जैसे अन्य बैंक कमाते हैं। आर्थिक रूप से यह आत्मनिर्भर है और सन् 1995 से कोई आर्थिक सहायता नहीं ली है। ग्रामीण बैंक में जमा राषि और इसके अन्य संसाधन इसके बकाया ऋण का 156 प्रतिषत हैं। अपनी स्थापना के बाद से सन् 1983, 1991 और 1992 को छोड़कर यह हर वर्ष लाभ की स्थिति में रहा है। इन सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि ग्रामीण बैंक के आंतरिक सर्वेक्षण के अनुसार इस बैंक के साथ 5 वर्ष तक या अधिक समय तक जुड़े रहने वाले ऋणी ग्राहकों में से 64 प्रतिषत से अधिक लोगों ने गरीबी रेखा पार कर ली (मुहम्मद युनूस, 2007 : पृ. 52)। यह बैंक गरीब महिलाओं को ऋण देता है जो ऋण अदायगी के मामले में पुरुषों से अधिक सक्षम साबित हुई हैं। महिलाओं को ऋण देने के लिए अपने लाभ थे क्योंकि यह परिवार और बच्चों पर खर्च किया जाता था और इससे स्थिति में बदलाव होता था। इसके सामाजिक और आर्थिक दोनों ही प्रकार के लाभ हुए और इन लाभों के अलावा इससे लोगों में गरिमा की भावना उत्पन्न हुई और भविष्य की आषा जगी। इसने उन्हें पूरी तरह गरीबी के कलंक से छुटकारा दिलाया। बैंक का विशेष सामाजिक एजेण्डा था। यह सिर्फ समग्र योजना में आर्थिक सुधार पर ही ध्यान नहीं देता था।

ऋण लेने के लिए जन सदस्यों को छोटे–छोटे समूहों में बाँटा जाता है। प्रत्येक समूह में पाँच सदस्य होते हैं और ऋण लेने के लिए सबकी सहमति आवष्यक है। यद्यपि प्रत्येक कर्ज़दार महिला अपने ऋण की अदायगी के लिए ज़िम्मेदार है किन्तु यह समूह एक छोटे सामाजिक तंत्र के रूप में काम करता है जो ऋण के बोझ (जो उनके लिए अनजाना है) संभाल सकने के लिए समय–समय पर व्यावहारिक सहायता करता है और उन्हें प्रोत्साहन और मनोवैज्ञानिक संबल देता है और सदस्य विशेष के व्यापार की अनजान दुनिया में आगे बढ़ने को प्रेरित करता है। पाँच सदस्यों का यह समूह भी अकेला नहीं होता। इस प्रकार के दस–बाहर समूह साप्ताहिक बैठकों के लिए एक केन्द्र पर आते हैं इस तरह के 13,000 से अधिक केन्द्र बांग्लादेष में हैं। इनमें से प्रत्येक ग्रामीण बैंक के पचास से साठ सदस्यों की सहायता करते हैं। साप्ताहिक बैठकों में ऋण की अदायगी का संग्रह बैंक के स्थानीय शाखा कार्यालय द्वारा किया जाता है। नए ऋण आवेदन जमा किए जाते हैं और अनेक प्रेरणादायक, निदेषात्मक और व्यावहारिक कार्य किए जाते हैं जिनमें नए व्यापार के विषय में विचार विमर्ष से लेकर स्वास्थ्य या वित्तीय विषयों पर चर्चा की जाती है। यह समूह के अभ्यास के लिए निर्धारित थोड़े से वक्त में होता है। केन्द्रीय नेतृत्व का चुनाव लोकतांत्रिक तरीके से होता है (उपर्युक्त, पृ. 57–58)। इसके सदस्य सोलह बातों की प्रतिज्ञा लेते हैं और इन बातों का पालन करने की पूरी प्रतिबद्धता व्यक्त करते हैं। इनमें से कुछ प्रतिज्ञाएँ हैं : अनुषासन, एकता, साहस, कठिन परिश्रम, अपनी घरेलू आवष्यकताओं की देखभाल स्वयं करना जैसे सब्जी उगाना, नए भवन का निर्माण आदि, अपने और परिवार के स्वास्थ्य की देखभाल करना, पर्यावरण को स्वच्छ रखना, सामूहिक रूप से प्रतिज्ञा लेना कि बाल विवाह नहीं करेंगे, एक दूसरे की सहायता करेंगे और सदस्यों में अनुषासन को कायम रखेंगे, सामूहिक रूप से सामाजिक गतिविधियों में हिस्सा लेंगे।

जैसा कि प्रो. युनूस रेखांकित करते हैं कि इस बैंक का उद्देष्य ही यह है कि मनुष्य के उन इरादों और प्रोत्साहन को स्वीकृति और सम्मान देना है जो विषुद्ध आर्थिक बातों से आगे जाकर किए जाते हैं। मनुष्य, माता–पिता, पुत्र आदि की भी भूमिका अपनी पेषागत ज़िम्मेदारियों के अलावा निभाता है। वे सम्बन्धों को महत्व देते हैं और दूसरों के लिए अधिकतम हित का प्रयास करते हैं, पारंपरिक बैंकों के लिए ये मानवीय सरोकार कोई अर्थ नहीं रखते किन्तु ग्रामीण बैंक की यह पूँजी है। गरीबों को जो ऋण दिया जाता है वह लेज़र बुक (बही खाता) में एक प्रविश्टि भर नहीं है न ही वह किसी व्यक्ति को दिए जाने वाले कुछ बिल हैं। यह जीवन के एक नया आकार देना है। न तो ग्रामीण बैंक के कर्मचारी और न ही कर्ज़दार इस यथार्थ से नज़र फेरते हैं। निस्संदेह इस बैंक की मुख्य हितकारी महिलाएँ हैं क्योंकि वे ही इस आष्चर्यजनक योजना की आवाज, जीवन और उसकी प्राण वायु हैं जिसने उनके जीवन में बेहतरी लाई गई है।

12.5 डी.डब्ल्यू.सी.आर.ए. (ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं और बच्चों का विकास) स्व–सहायता समूह

स्व–सहायता समूह (Self-Help Groups - SHGs) ग्रामीण और शहरी दोनों ही क्षेत्रों में महिलाओं की आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा के सबसे बड़े स्रोत हैं। वे स्थानीय स्तर पर काम करते हैं। इनका आधार स्थानीय संसाधन और लघु उद्योग है। वे विकास के लिए विषाल मानव शक्ति और उपलब्ध कच्चे माल का भी इस्तेमाल करते हैं। अल्प ऋण योजनाओं के माध्यम से स्व–सहायता समूह समन्वयकारी भूमिका निभाते हैं। इनका प्रभावी तंत्र होता है। इनका उद्देष्य स्व–सहायता समूहों और समाज के छोटे–छोटे समूहों की बेहतरी के लिए कार्य करना है। यदि इसका क्रियान्वयन पूरी निष्ठा और सुधार की ललक के साथ किया जाए तो इसकी सफलता इसमें निहित हैं। संक्षेप में स्व–सहायता समूह व्यक्तियों का एक छोटा समूह है जो किसी आम समस्या (उभयनिष्ठ समस्या) के समाधान की खोज़ में एक साथ जुड़ते हैं जैसे चिकित्सा सम्बन्धी मुद्दे, रोज़गार सृजन या जल प्रबंधन इसमें एक स्तर पर आत्मनिर्भरता भी हो (जयदेषमुख – राजादीव, पृ.1)

स्व–सहायता समूह गरीब महिलाओं का सषक्तीकरण भी करते हैं। इनमें से 4.8 मिलियन (48 लाख) महिलाएँ स्व–सहायता समूहों से जुड़ गई हैं। शुरुआती कार्यक्रमों का लक्ष्य था ग्रामीण गरीब महिलाओं को स्वरोज़गार प्रदान करना, सषक्तीकरण करना और उन्हें विकास प्रक्रिया के साथ जोड़ना शामिल है। एक ही स्तर की महिलाओं का समूह सामूहिक रूप से किसी आर्थिक कार्य का चुनाव कर सामूहिक रूप से करेगा जो उनके कौषल और संसाधनों के अनुकूल हैं और सरकार जिसके लिए धन उपलब्ध कराए (उपर्युक्त)। ये समूह आन्ध्र प्रदेष में सन् 1979 से कार्य कर रहे हैं किन्तु बड़े पैमाने पर वे काम नहीं कर सके। बाद के वर्षों में इन समूहों की कार्य प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन देखा गया जिसने महिला सषक्तीकरण को अत्यधिक बल मिला। यही नहीं अपनी गरीबी की जिन्दगी से मुक्ति पाकर नया और बेहतर जीवन जीने के लिए महिलाओं के उत्साह ने उन्हें कठिनाइयों से निज़ात दिलाई और एक गरिमापूर्ण और सौभ्य जीवन जीने की दिषा में एक नई आषा की किरण दिखाई दीं। वेलुगू (इसका अर्थ प्रकाष है) के नाम से शुरु हुए इस कार्यक्रम का उद्देष्य आरंभ में ग्रामीण क्षेत्रों में रह रहे 2.9 मिलियन (29 लाख) सबसे गरीब लोगों तक पहुँचना था, उनकी समस्याएँ सुलझाना था।

ग्रामीण गरीबी और अभावग्रस्तता से छुटकारा पाने के लिए और सामाजिक–आर्थिक मुद्दों को सुलझाने का एक अच्छा तरीका है स्व–सहायता समूहों के द्वारा कल्याणकारी योजनाओं का सफलतापूर्वक किया और मितव्ययता और बचत के द्वारा महिलाएँ अच्छी तरह से एक गरिमापूर्ण जीवन जी सकती हैं और अपने भविष्य को संवार सकती हैं। आंध्र प्रदेष में पिछले कुछ दषकों से विकास का एजेण्डा ग्रामीण

गरीब लोगों – विशेषतः महिलाओं की स्थिति पर केन्द्रित रहा है। इन समूहों की महिला सदस्य अधिक धन बचा पाते हैं और वे अपने लक्ष्य के लिए राज्य सरकार से अच्छा समर्थन पा रहे हैं। सरकार भी इन स्व–सहायता समूहों को सहायता करने का सजग प्रयास कर रही है और उन्हें DWCRA के अंतर्गत सचल निधि प्रदान कर रही है। विष्व अल्प ऋण सम्मेलन (World Micro Credit Summit), वाषिगंटन में आयोजित किया गया। इसमें यह रेखांकित किया गया कि महिलाओं का स्व–सहायता आन्दोलन सामाजिक आर्थिक गरीबी से छुटकारा पाने का एक अत्यंत महत्वपूर्ण उपाय है। इस सम्मेलन की योजना के अनुसार विष्व भर में कुल 100 मिलियन (10 करोड़) महिलाओं को स्व–सहायता समूहों के साथ जोड़ने की आवष्यकता है (डी वी राव एवं विजय कुमार, 2001)।

DWCRA समूहों ने मितव्ययता एवं ऋण व्यवस्था को अपनाया गा था क्योंकि उन्होंने देखा कि बैंक उन्हें ऋण देने में असमर्थ हैं। इससे उनमें आत्मनिर्भरता आई और उनकी उद्यमषीलता को बल मिला। इन समूहों के उद्देष्य हैं :

- ग्रामीण क्षेत्रों की गरीब महिलाओं और बच्चों की जीवन स्थिति और गुणवत्ता में सुधार लाना।
- चल रहे विकास कार्यक्रमों के प्रभाव को उन्हें जागृति, सहयोग, सुदृढ़ करके और एकीकृत करके बढ़ाना
- कार्यक्रमों की योजना एवं क्रियान्वयन में समुदायों को शामिल करना जिससे कि आवष्यकता आधारित कार्यों को समुदायों द्वारा बाहरी सहायता बन्द होने के बाद भी चलाया जा सके।

DWCRA समूहों की सफलता निम्नलिखित बातों पर निर्भर करती हैं:

1) गरीब महिलाओं का समूह सोद्देष्य बनाना
2) सदस्यों के मेलमिलाप के लिए सदस्यताग्रहण करते समय बचत करना
3) लोकतांत्रिक ढंग से प्रबंधन और सामूहिक निर्णय करने वाले समूह बनाना
4) बाहरी बाज़ार के समर्थन पर कम से कम निर्भर रहना

इन समूहों का प्रषिक्षण चार चरणों में चलता है जिनमें शामिल हैं : समूह निर्माण, टीम निर्माण, प्रस्तुतीकरण और संप्रेषण, कौषल, सामुदायिकता प्रतिभागिता और कौषल में सुधार, महिलाओं एवं बच्चों के स्वास्थ्य की देखभाल, बच्चों एवं वयस्कों की षिक्षा और साक्षरता दर में सुधार, पर्यावरण संरक्षण सम्बन्धी जागरूकता कार्यक्रम, स्वच्छ जल व्यवस्था, साफ सफाई, समूह ऋण कौषल, बाज़ार–कौषल में सुधार और स्व–सहायता समूहों के द्वारा महिलाओं द्वारा बनाए गई वस्तुओं की प्रदर्षनी और बिक्री आदि। कृषि, बागवानी, पुनरोत्पादन, छोटी मोटी सिंचाई परियोजना जैसे नलकूप, गैर–कृषि क्षेत्रों के कार्य जैसे दुग्ध उत्पादन, घरेलू उपयोग की वस्तुओं के उत्पादन जैसे अचार और मसाले, अगरबत्ती, बेकरी वस्तुएँ, हथकरघा के उत्पादन, मुर्गी पालन के विकास और मत्स्य पालन आदि के कौषल में सुधार लाने के लिए प्रषिक्षण दिया जाता है।

DWCRA उत्पादों के विपणन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही है कि ये वस्तुएँ गुणवत्तापरक और कम कीमत में मिलने वाली वस्तुओं के रूप में लोकप्रिय हो गई हैं। सरकार ने समय–समय पर इन वस्तुओं की प्रदर्षनी और बिक्री के लिए सहयोग देकर इन वस्तुओं के उत्पादकों को वास्तविक हितकारी बनाने में सहायता की। इससे उत्पादकों के उपभोक्ताओं से अन्तःक्रिया या परस्पर संवाद में सहायता मिली। उन्हें अपनी क्षमता–निर्माण और आत्मगरिमा बढ़ाने और उन्हें उत्पादन एवं निर्माण की बेहतर प्रौद्योगिकी, पद्धति एवं तकनीक हासिल करने एवं विकास कार्य से सम्बन्धित आगे संवाद

स्थापित करने के लिए तंत्र (नेटवर्क) को बढ़ावा देने में सहायता मिली। कर्ज़दाताओं पर निर्भरता पूरी तरह से समाप्त कर दी गई थी। उन्होंने छोटे परिवार के आदर्ष को अपनाना शुरु कर दिया और बेहतर षिक्षा ग्रहण कर ली, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के स्तर में सुधार आया, बाल मज़दूरी कम हुई, आर्थिक एवं सामाजिक कल्याण में सुधार के लिए महिलाएँ सरकार में सक्रिय भागीदार बनी, ऋण अदायगी के मामले में कोई भी बकायादार नहीं था। समूह बीमा लागू हुआ। महिलाओं के आत्म विष्वास में वृद्धि हुई उनकी आत्म गरिमा बढ़ी और वे अपने अधिकारों एवं ज़िम्मेदारियों के प्रति अधिक जागरूक हुईं।

12.6 सारांष

इस इकाई में महिला सषक्तीकरण के मामले में स्व–सहायता समूहों के महत्व को विभिन्न विशिष्ट अध्ययनों (केस स्टडीज) के माध्यम से रेखांकित और स्पष्ट किया गया है। इनमें दो अन्तर्राष्ट्रीय और दो राष्ट्रीय मॉडल का उदाहरण दिया गया है जो हमेषा के लिए महत्वपूर्ण हैं। इन आंदोलनों की एक अत्यंत महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि विपरीत स्थितियों और नकारात्मक अभियानों के बावजूद इनका आरंभ एवं विकास हुआ। उल्लेखनीय यह है कि इसमें सरकार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और गरीबी उन्मूलन और भूख से मुक्ति को लेकर बनाई गई कल्याणकारी योजनाओं को चलाने में सरकार का सहयोग महत्वपूर्ण है। विभिन्न समाजों में महिलाओं ने अपने जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन किया है। वे सामाजिक कार्यकर्ता और सफल उद्यमी बनकर अपने जीवन में आषा, गरिमा और आत्म गौरव का भाव जगाया। एक प्रकार से उन्होंने स्वयं को सषक्त बनाकर जीवन को बेहतर बनाने, स्वास्थ्य, स्वच्छता और षिक्षा के स्तर को बढ़ाने और इस प्रक्रिया में परोपकारी स्वभाव बनाने में संलग्न किया। स्व–सहायता समूह दूरदराज़ के इलाकों की महिलाओं को एक मंच पर लाने और उनकी गरीबी की जिन्दगी से निजात दिलाने में बहुत शक्तिषाली माध्यम है। स्व–सहायता समूह महिलाओं के जीवन एवं समाज में बेहतरी लाने के महत्वपूर्ण उपकरण हैं।

12.7 बोध प्रष्न

1) स्व–सहायता समूह क्या हैं और वे महिला सषक्तीकरण में किस प्रकार सहायता करते हैं? अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

2) केन्या में हरित क्षेत्र आन्दोलन के उद्देष्यों एवं उपलब्धियों का संक्षिप्त विवेचन कीजिए।

3) बांग्लादेष में ग्रामीण बैंक के विकास और सफलता का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

4) सेवा (SEWA) ने किस प्रकार महिला सषक्तीकरण लाने में योगदान दिया?

5) DWCRA समूहों के आरंभ और सफल क्रियान्वयन का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

12.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

भट्ट इला, आर., "सेवा'ज (SEWA's) पर्सपेक्टिव्स ऑफ अरली ईयर्स ऑफ इंडीपेंसडेंस", *इकॉनामिक एंड पॉलिटिकल वीकली "*, खंड 33, सं. 17, 1998, पृ.25–27

दत्ता, रेखा, "फ्रोम डेवलेपमेंट टू इम्पावरमेंट : दी सेल्फ–इम्पाल्यड वीमेन'स एसोसिएषन ऑफ इंडिया", *इंटरनेषनल जर्नल ऑफ पॉलिटिक्स, कल्चर एंड सोसाइटी,* खंड 16, सं.3, स्प्रिंग 2003, पृ.351–368

गालब, एस. एवं एन. चन्द्रषेखर राव, "वीमेन'स सेल्फ हेल्प ग्रुप्स, पावर्टी एलिवेषन एंड इम्पावरमेंट, *इकॉनामिक एंड पॉलिटिकल वीकली "*, खंड 38, सं. 12/13, 2003, पृ.1274–1283।

जॉय देषमुख रणदिवे, *वीमेन'स सेल्फ हेल्प ग्रुप्स इन आंध्र प्रदेष – पार्टिसिपेटरी पावर्टी एलिवेषन इन एक्षन,* आई बी आर डी पब्लिकेषन्स, 2004

रमालक्ष्मी, सी. एस. DWCRA –ए सक्सेषफुल एक्सपेरिमेंट टू इमेंसिपेट रूरल वीमेन इन आंध्र प्रदेष, (नीचे दिए गए यू आर एल को देखिए)।

राव, डी.वी. एवं विजय कुमार, (संपा.), *डेवलेपमेंट विद ह्यूमन टच,* सीरियल पब्लिकेषन्स, नई दिल्ली, 2001

ठाकुर, अनिल कुमार एवं प्रवीण शर्मा (संपा.), *माइक्रो क्रेडिट एण्ड रूरल डेवलेपमेंट,* दीप एंड दीप पब्लिकेषन्स, नई दिल्ली, 2009

युनूस मुहम्मद, *क्रिएटिंग ए वर्ल्ड विदाउट पावर्टी, सोषल बिजनेस एण्ड फ्यूचर ऑफ़ कैपिटलिज्म,* पब्लिक अफेयर्स पब्लिकेषन, यू.एस. 2007

नोबेल शान्ति पुरस्कार विजेता वंगाराई मथाई का पर्यावरण और इराक में युद्ध, ऋण और महिलाओं की समानता से जुड़े मुद्दों पर "डेमोक्रेसीवाद" के अभी गुडमैन के साथ साक्षात्कार, मंगलवार 8 मार्च 2005, स्रोतः *मेरिडियंस,* खंड 6, सं. 1 (2005) पृ. 202–215, प्रकाषक, इण्डियाना यूनिवर्सिटी प्रेस स्टेबल (वेबसाइट URL : http://www.jstor.org/stable/40338693 26 जुलाई 2011 को 5 : 38 पर लिया गया।)

नोबेल शान्ति पुरस्कार विजेता वंगाराई मथाई का भाषण नोबेल लेक्चर ओस्ला, 10 दिसम्बर 2004, स्रोत मेरिडियंस, खंड 6, सं. 1 (2005) पृ. 195–201, प्रकाषक, इण्डियाना यूनिवर्सिटी प्रेस स्टेबल (वेबसाइट URL : http://www.jstor.org/stable/40338693 26 जुलाई 2011 को 5 : 39 पर लिया गया।)

सम्बन्धित वेबसाइट लिंक

आंध्र प्रदेष सामुदायिक स्व–सहायता मॉडल http://www.cgg.gov.in/pdfs/WP-77-92.pdf

विभिन्न प्रकार के लघु वित्तीय प्रारूपों का महिलाओं पर प्रभाव http://www.apmas.org/pdf impact%20%20Various%20Forms%20of%20Micro%20Financing%20on%20Women.pdf

आंध्र प्रदेष में महिलाओं के स्व–सहायता समूह – *पार्टिसिपेटरी पावर्टी एलिवेषन इन एक्षन* http:/ /info.worldbank.org/etools/docs/reducingpoverty/case/82/fullcase/ india%20SHGs% 20Full%20Case.pdf

DWCRA –ए सक्सेषफुल एक्सपेरिमेंट टू इमेंसिपेट रूरल वीमेन इन आंध्र प्रदेष, http:// www.rd.ap.gov.in/PPT and PDF/DWCRA-A%20SUCCESSFUL%20EXPERIMENT% 20TO%20EMANCIPATE%20RURAL%20WOMEN%20IN%20APDF 27 जुलाई 2011 को लिया गया।)

http://www.pats-eduent.net/xpeople_6maathai.pdf

(वंगारी मथाई बायोग्राफी, 19 जुलाई 2011 को 10:30 पी.एम. पर लिया गया।)

http://www.gsdrc.org/docs/open/HD750.pdf

(ग्रीन बेल्ट मूवमेंट केन्या–2, 19 जुलाई 2011 को 10:40 पी.एम. पर लिया गया।)

http://www.greenbeltmovement.org/downloads/2009_climate_change_report_short_GBM.pdf

(ग्रीन बेल्ट मूवमेंट केन्या–3, 19 जुलाई 2011 को 10:45 पी.एम. पर लिया गया।)